

न्यायालय उपायुक्त, पाकुड़
आर0एम0आर0 वाद सं0-03/2019-20

धर्मेन्द्र नाथ साहा एवं अन्य
बनाम
दुलार दुडू

आदेश की क्रम संख्या और तारीख	आदेश और पदाधिकारी का हस्ताक्षर	आदेश पर की गई कार्यवाई के बारे में टिप्पणी, तारीख सहित
1	2	3
	आदेश यह रिविजनवाद, रिविजनकर्ता (1) धर्मेन्द्र नाथ साहा (2) ज्ञानेन्द्र साहा, दोनों के पिता-स्व0 सत्य हरि साहा (3) संगीता देवी, पति-स्व0 जितेन्द्र नाथ साहा (4) सरस्वती देवी, पति-स्व0 रितेन्द्र नाथ साहा, सभी का सा0-नयाग्राम, वर्तमान पता सा0-हिरणपुर, थाना-हिरणपुर, जिला-पाकुड़ के द्वारा विज्ञ अनुमंडल पदाधिकारी, पाकुड़ के न्यायालय के आर0ई0आर0 वाद सं0-14/2015-16 में दिनांक-22.10.2016 को पारित आदेश के विरुद्ध दुलार दुडू, पति-स्व0 गायना मुर्मू, सा0-घाघरजानी, थाना-हिरणपुर, जिला-पाकुड़ को पक्षकार बनाते हुए दाखिल किया गया है। मामला संक्षेप में यह है कि इस वाद की उत्तरवादी दुलार दुडू के द्वारा अंचल-हिरणपुर के मौजा नयाग्राम नं0-40 के खाता सं0-83 के दाग सं0-555 अन्तर्गत रकवा 01-09-13 धुर एवं दाग सं0-651 अन्तर्गत रकवा 05-16-15 धुर जमीन से इस वाद के रिविजनकर्ता सं0-01 एवं 02 तथा अन्य को उच्छेद करने हेतु निम्न न्यायालय में अनुरोध किया गया। निम्न न्यायालय द्वारा आर0ई0आर0 वाद सं0-14/2015-16 संस्थित कर सुनवाई की गई तथा दाग सं0-651 एवं 406 से विपक्षीगण द्वारा खरीदगी भूमि से अतिरिक्त भूमि तथा दाग सं0-555 अन्तर्गत भूमि से विपक्षीगण को उच्छेद किया गया। यह रिविजन आवेदन निम्न न्यायालय द्वारा दाग सं0-555 से उच्छेदी हेतु पारित उक्त आदेश के विरुद्ध दाखिल किया गया है। उत्तरवादी दिनांक-09.12.2022 से लगातार अनुपस्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस वाद में उनकी कोई अभिरुची नहीं रह गई है। अतः वाद को Ex-Parte सुना गया। रिविजनकर्ता के विज्ञ अधिवक्ता का कहना है कि निम्न न्यायालय द्वारा हिरणपुर अंचल के मौजा नयाग्राम नं0-40 के जमाबंदी सं0-83 के दाग सं0-555 अन्तर्गत रकवा 01-09-13 धुर जमीन से उच्छेदी हेतु पारित आदेश गलत एवं विधि विरुद्ध है। उक्त भूमि खतियान में खतियानी रैयत विशु दुडू के नाम से दर्ज है।	

आदेश की क्रम संख्या और तारीख	आदेश और पदाधिकारी का हस्ताक्षर	आदेश का कार्यवाही टिप्पणी
1	2	3 या 4
	खतियानी रैयत के वैद्य उत्तराधिकारी द्वारा निबंधित विक्रय केवाला सं०-233/1931 द्वारा उक्त भूमि रकवा 01-09-13 धुर आली मंडलाईन को बेच दी गई थी। उक्त भूमि बाद में पारिवारिक बंटवारे में आली मंडलाईन के पुत्र मुकुन्द साह को प्राप्त हुई, जिनके द्वारा निबंधित विक्रय केवाला सं०-3091/1965 द्वारा सत्य हरि साहा को बेच दी गई। सत्य हरि साह के चार पुत्र जितेन्द्र नाथ साहा, रितेन्द्र नाथ साहा, धर्मेन्द्र नाथ साहा एवं ज्ञानेन्द्र नाथ साहा हुए। बाद में पारिवारिक बंटवारे में उक्त भूमि जितेन्द्र नाथ साहा एवं रितेन्द्र नाथ साहा को प्राप्त हुई। रिविजनकर्ता सं०-02 एवं 03 उक्त दोनो भाईयों की वैद्य उत्तराधिकारी है। प्रश्नगत भूमि पर रिविजनकर्ता सं०-02 एवं 03 का दखल-कब्जा है। उनका आगे कहना है कि प्रश्नगत भूमि विक्रयशील मौजा में अवस्थित है तथा SPT Act 1949 की धारा 20 एवं 42 इसपर प्रभावी नहीं होगी। दाग सं०-555 की भूमि वर्ष 1931 में ही खतियानी रैयत के वंशज द्वारा बेच दी गई है। SPT Act 1949 के लागू होने की तिथि के पूर्व लगातार 12 वर्षों के दखल-कब्जा के आधार पर प्रश्नगत भूमि पर Occupancy Right एवं Adverse Possession उत्पन्न हो चुका है। निम्न न्यायालय द्वारा विक्रयशील भूमि पर उच्छेदी का आदेश पारित किया गया है, जो विधि विरुद्ध है। उनके द्वारा रिविजन आवेदन स्वीकृत करते हुए निम्न न्यायालय के आदेश को निरस्त (Set-aside) करने का अनुरोध किया गया। अभिलेख में उपलब्ध कागजातों से उत्तरवादी का पक्ष यह है कि प्रश्नगत दाग सं०-555 विगत सर्वे खतियान में विशु दुडू के नाम से दर्ज है। उत्तरवादी उक्त खतियानी रैयत की पुत्री लुखी दुडू के पुत्र गायना मुर्मू की पत्नी है। इस आधार पर वे प्रश्नगत भूमि की वैद्य उत्तराधिकारी है। प्रश्नगत दाग सं०-555 में जबरन दखल-कब्जा किया गया है। सम्पूर्ण अभिलेख का अवलोकन एवं अध्ययन किया गया। दाखिल कागजातों से यह स्पष्ट है कि प्रश्नगत दाग सं०-555 अन्तर्गत रकवा 01-09-13 धुर जमीन विगत सर्वे खतियान में विशु दुडू के नाम से दर्ज है। विशु दुडू के उत्तराधिकारी द्वारा उक्त भूमि वर्ष 1931 में निबंधित विक्रय केवाला सं०-233/1931 द्वारा आली मंडलाईन को बेच दी गई थी। बाद में उक्त भूमि निबंधित केवाला सं०-3091/1965 द्वारा सत्य हरि साहा ने क्रय किया। अपीलकर्ता सं०-03 एवं 04 उक्त सत्य हरि साहा की उत्तराधिकारी है। प्रतिवेदनानुसार प्रश्नगत भूमि विक्रयशील भूमि है। अर्थात् उक्त भूमि का हस्तांतरण किया जा सकता है। SPT Act 1949 की धारा 20(i) निम्नवत् है :-	

की कम आ और तारीख	आदेश और पदाधिकारी का हस्ताक्षर	आदेश पर की गई कार्रवाई के बारे में टिप्पणी, तारीख सहित
1	2	3
	“No Transfer by a raiyat of his right in his holding or any portion thereof, by sale, gift, mortgage, will, lease or any other contract or agreement, express or implied, shall be valid unless the right to transfer has been recorded in the record-of-right, and then only to the extent to which such right is so recorded.” अर्थात् किसी रैयत द्वारा अपने अधिकार का हस्तांतरण किसी भी रूप में नहीं किया जा सकेगा, जबतक कि हस्तांतरण का अधिकार Record of Right में दर्ज न हो। हस्तांतरण भी उसी हद तक किया जा सकेगा, जितना Record of Right में दर्ज हो। प्रश्नगत भूमि विक्रयशील है ऐसे में उक्त भूमि का हस्तांतरण धारा 20(i) का उल्लंघन नहीं है। धारा 42 का उद्धरण निम्नवत् है :- “The Deputy Commissioner may be at any time either of his own motion or on an application made to him pass an order for ejectment of any person who has encroached upon, reclaimed, acquired or come into possession of agricultural land in contravention of the provisions of the Act or any law or any thing having the force of law in the Santal Parganas.” उक्त धारा से यह स्पष्ट है कि SPT Act 1949 या किसी अन्य कानून जो संथाल परगना में प्रभावी है, का उल्लंघन कर यदि कोई व्यक्ति किसी कृषि भूमि पर अतिक्रमण, कब्जा आदि करता है तो उसे उस भूमि से वेदखल किया सकता है। स्पष्ट है कि SPT Act 1949 की धारा 20(i) का जब उल्लंघन नहीं हुआ है तो ऐसे में धारा 42 के तहत उच्छेदी का आदेश पारित करना विधि विरुद्ध है। SPT Act 1949 की धारा 20(2) भी इस मामले में प्रभावी नहीं हो सकती है क्योंकि भूमि का विक्रय वर्ष 1931 में ही किया जा चुका है। SPT Act 1949 के लागू होने के पूर्व इस अधिनियम की धारा 20(i) के सदृश्य एक प्रावधान Santhal Parganas Settlement Regulation, 1872 (Regulation III of 1872 की धारा 27 में वर्णित है। उक्त धारा 27 का उद्धरण निम्नवत् है - 27(1) No transfer by a raiyat of his rights in his holding or any portion thereof, by sale, gift, mortgage, lease or any other contract or agreement, shall be valid unless the right to transfer has been recorded in the record of rights; and then only to the extent to which such right is so recorded. (2) No transfer in contravention of sub section (1) shall be registered,	

आदेश की क्रम संख्या और तारीख	आदेश और पदाधिकारी का हस्ताक्षर
1	2
	or shall be in any way recognized as valid by any court, whether in the exercise of Civil, Criminal or Revenue Jurisdiction. (3) If at any time it comes to the notice of the Deputy Commissioner that a transfer in contravention of sub section(I) has taken place he may in his discretion , evict the transferee and either restore the transferred land to the raiyat or any heir of the raiyat who has transferred it, or re-settle the land with another raiyat according to the village custom for the disposal of an abandoned holding. उक्त Regulation 1872 में SPT Act 1949 की धारा 20 (2) जैसा कोई प्रावधान नहीं है। स्पष्ट है कि SPT Act 1949 के लागू होने के पूर्व उस समय के प्रभावी कानून के अनुसार Tribal व्यक्ति द्वारा Non tribal व्यक्ति को विक्रयशील मौजा में जमीन का हस्तान्तरण करने पर कोई रोक नहीं थी। चूंकि प्रश्नगत भूमि का हस्तान्तरण वर्ष 1931 में ही हो चुका है अतः इसे बिन्दु पर इस अवैध नहीं माना जा सकता है। इस प्रकार निम्न न्यायालय द्वारा पारित आदेश त्रुटिपूर्ण है। अतः उपर्युक्त विवेचना के आधार पर रिविजन आवेदन स्वीकृत करते हुए निम्न न्यायालय द्वारा पारित आदेश को निरस्त (set-aside) किया जाता है। उभय पक्ष के विज्ञ अधिवक्ता को आदेश का अवलोकन करा दें। लेखपित एवं संशोधित। उ. फ. यु. क्त, पाकुड़। उ. फ. यु. क्त, पाकुड़।